Environmental Protection and Social Work Profession

[Proceeding With Full Paper]

Editors

Dr Bijendr Pradhan
Dr Pushpa Mishra
Mr Ankit Sharma
Dr Vikas Sharma

Scanned by CamScanner

Environmental Protection and Social Work Profession
[Edited Book]

ISBN: 978-93-83634-45-3

© Editing Teem -2019

Editors: Dr. Bijendr Pradhan, Dr. Pushpa Mishra
Mr. Ankit Sharma, Dr. Vikas Sharma

Co-editors: Mr. Ranjit Kumar Jaiswal Mr. Indra Ram Poonia

First Edition: March, 2019

Price: 350/-

Published by: Department of Social Work
Jain Vishva Bharati Institute,
Ladnun-341306 (Rajasthan)

Printed by:

No part of this book may be reproduced or transmitted any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording or by any information storage and retrieval system, without permission in writing from the publishers.

Cover Page Photo Credits:
https://www.instagram.com/p/BtTV1koHYVX/?utm_source=ig_share_sheet&igshid=1svv9176cp9a

Scanned by CamScanner

16.	Impact of ngo's in Environmental Protection	Jaseemul Farhan KP Hamid Mahswoom K Noorjahan CJ	129-13
17.	Migration Induced by Climate Change: Policies and Actions.	Kasib Ali	135-14
18.	Climate Change : A Global Threat and The Role of Social Worker	Dr. A. K. Bhartiya Samra Anwer	141-14
19.	Exploring Innovations in Policy for Agriculture Bioinformatics and Cultivation of Scientific and Sustainable Skills in India	Diwakar Kumar	150-15
20.	Monoculture and polyculture impacts on biodiversity	Jiya Choudhary	156-16
21.	Environment protection & role of social workers	Gaurav Dixit	163-17
22.	Psychiatric Problems Of Elderly	Ambrish Kumar Rai	171-17
	हिन्दी खण्ड		
23.	भगवान महावीर का पर्यावरण दर्शन	डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा	191-19
24.	प्रदूषण : एक गम्भीर समस्या	कु. अपराजिता, छात्रा	195-19
25.	वन संरक्षण में जनजातीय समुदाय की सहभागिता	डॉ बिजेन्द्र प्रधान कृष्ण कुमार तिवारी	199-204
26.	पर्यावरण संरक्षण में समाज कार्य की पद्धतियों का प्रयोग	डॉ. लालाराम जाट	205-210
27.	ई–अपशिष्ट–एक पर्यावरणीय समस्या एवम उसका प्रबन्धन।	डॉ. विकास शर्मा	211-214
28.	पर्यावरण संरक्षण एवं वैश्विक राजनीति	डॉ. जुगल किशोर दाधीच	215-220
29.	पर्यावरण संरक्षण और जन चेतना	डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़	221-226
30.	पर्यावरण संरक्षण में पर्यावरण शिक्षा एवं समाजकार्य कर्ता की भूमिका	डॉ. आभा सिंह	227-230
31.	पर्यावरण संरक्षण और अहिंसा	डॉ. हेमलता जोशी	231-234
32.	जैनदर्शन और पर्यावरण–संरक्षण:एक अध्ययन	डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज	235-238

Scanned by CamScanner

भगवान महावीर का पर्यावरण दर्शन

डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा
विभागाध्यक्ष, संस्कृत एवं प्राकृत विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

इस विश्व में मैं अकेला नहीं हूं, केवल मेरा ही अस्तित्व नहीं है।' यह पर्यावरण विज्ञान का मौलिक है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आसपास सभी दिशाओं में पर्यावरण का कवच पहने हुए श्वास ले रहा है। परिपार्श्व में जीव और अजीव दोनों का पर्यावरण है। मिट्टी, पानी, अग्नि, वायु और पेड़ पौधों की अपने अस्तित्व की सुरक्षा है। इनके प्रदूषण का अर्थ है जीवन को खतरे में डालना।

भगवान महावीर ने कहा–मिट्टी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति–इन सबमें जीव है। उनके अस्तित्व अस्वीकार मत करो। **जे लोयं अब्भाइक्खइ, से अत्ताणं अब्भाइक्खइ। जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ, से लोयं अब्भाइक्खइ।**[1] उनके अस्तित्व के अस्वीकार का अर्थ है–अपने अस्तित्व का अस्वीकार। अपने तित्व को अस्वीकार करने वाला ही उनके अस्तित्व को नकार सकता है। स्थावर और जंगम, दृश्य और श्य–सभी जीवों का अस्तित्व स्वीकारने वाला ही पर्यावरण के साथ न्याय कर सकता है।

दूसरों के अस्तित्व, उपस्थिति, कार्य और उपयोगिता को स्वीकार करने वाला ही व्यक्ति और समाज बीच सामंजस्य स्थापित कर सकता है।

महावीर अहिंसा के महान प्रवक्ता थे। उनके अहिंसा विज्ञान को पर्यावरण विज्ञान भी कहा जा ता है। पानी का अनावश्यक व्यय, पेड़ पौधों का अनावश्यक उपभोग–ये सब महावीर की अहिंसा में रणीय काम हैं। ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण की समस्या का समाधान केवल वनस्थली निर्माण नहीं है। उसका समाधान है व्यवसायीकरण की अंधी प्रवृत्ति पर नियंत्रण। क्या इस मुक्त सिकता और मुक्त भोग के वातावरण में संयम की बात सोच सकते हैं? क्या संयम का अर्थ समझे बिना पर्यावरण के प्रदूषण को कम सकते हैं? आचार्य तुलसी ने इसीलिए उद्घोष दिया–**संयमः खलु वनम्।** पर्यावरण का प्रदूषण स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। अधिक आवश्यकता, अधिक मांग, अधिक पत और अधिक उपभोग पर्यावरण प्रदूषण के कारण तत्त्व हैं। इस वैज्ञानिक और विकास के युग में वश्यकता और उपभोग को कम करने की-बात कहना अपराध जैसा लगा रहा है। हम सचाई के साथ ब तक आंख मिचौनी का खेल खेलते रहेंगे? आखिर यथार्थ को स्वीकारना ही होगा। पर्यावरण विज्ञान का क महत्त्वपूर्ण सूत्र है–लिमिटेशन। पदार्थ कम हैं उपभोक्ता अधिक हैं। इस समस्या का समाधान है संयम।

इच्छा और भोग, सुख, सुखवादी और सुविधावादी दृष्टिकोण ने हिंसा को बढ़ावा दिया है और साथ–साथ पर्यावरण का संतुलन भी विनष्ट किया है। अहिंसा का सिद्धांत आत्मशुद्धि का है तो साथ–साथ यह पर्यावरण शुद्धि का भी है। पदार्थ सीमित हैं, उपभोक्ता अधिक हैं और इच्छा असीम है। अहिंसा का सिद्धांत है–इच्छा का संयम करना, उसकी कांट–छांट करना। जो इच्छा पैदा हो, उसे उसी रूप में स्वीकार न करना, किंतु उसका परिष्करण करना। आज के वैज्ञानिक और उद्योगपति मनुष्य के सामने अधिक–से–अधिक सुविधा के साधन प्रस्तुत करना चाहते हैं। जो पहले कभी नहीं बने, वैसे पदार्थों का निर्माण कर उन्हें जन–साधारण के लिए सुलभ करना चाहते हैं। एक ओर जनता का सुविधावादी दृष्टिकोण बन गया है, दूसरी ओर सुविधा के साधनों के निर्माण की होड़ लगी हुई है। जीवन की अनिवार्य आवश्यकताएं कुछ गौण बन गई हैं, सुविधा के साधन और प्रसाधन सामग्री–ये मुख्य बन गए हैं। इस स्थिति में अनावश्यक हिंसा बढ़ी है और साथ–साथ पर्यावरण का संतुलन भी बिगड़ा है।

आज पर्यावरण के प्रदूषण का कोलाहल बहुत हो रहा है पर वह प्रदूषण कैसे मिटे? सुविधावादी आकांक्षा की आग जले और प्रदूषण का धुंआ न उठे, यह कब संभव है? अहिंसा के सिद्धांत की उपेक्षा कर पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को सुलझाया नहीं जा सकता।

Scanned by CamScanner